भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur

An ISO 9001:2015 Certified Organisation

## 23 से 29 जुलाई 2024 तक कपास की खेती के लिए सातवीं साप्ताहिक सलाह

| हरियाणा | | पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी) | | | | | अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी) | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | जुलाई | | | | | जुलाई | | | | |
| | | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |
| | हिसार | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 45 | 31 | 2 | 2 | 1 |
| | जींद | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 21 | 18 | 8 | 16 | 6 |
| | सिरसा | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 28 | 32 | 2 | 1 | 2 |
| | रोहतक | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 32 | 21 | 6 | 7 | 2 |
| वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड | | 0.1 से 2.4 मिमी | | 2.5 से 15.5 मिमी | | 15.6 से 64.4 मिमी | | 64.5 से 115.5 मिमी | | 115.6 से 204.4 मिमी | |
| वर्षा श्रेणी | | बहुत हल्की वर्षा | | हल्की वर्षा | | मध्यम वर्षा | | भारी वर्षा | | बहुत भारी वर्षा | |

**फसल की स्थिति:**

हिसार में, फसल वानस्पतिक से फूल आने की अवस्था में 56 से 105 दिन की होती है। अंतर-कृषि संचालन और गुलाबी बॉलवॉर्म के लिए कीटनाशक का छिड़काव शुरू किया गया। अधिकांश खेत खरपतवार से मुक्त हैं। हालाँकि, बारिश के बाद कुछ खेतों में मोथा, मकरा, संथी और दूब जैसे खरपतवार देखे गए। फसल की वृद्धि के अनुसार खुरपा/फावड़े से हाथ से निराई-गुड़ाई करें अथवा यांत्रिक गुड़ाई करें। सफेद मक्खी की संख्या बढ़ रही है और कुछ स्थानों पर यह आर्थिक सीमा (ईटीएल) से ऊपर जा रही है। जैसिड और थ्रिप्स आर्थिक सीमा के करीब है लेकिन कुछ स्थानों पर ईटीएल से ऊपर है। पिछले 10 से 15 दिनों में गुलाबी बॉलवर्म की ट्रेप/जाल में संख्या में वृद्धि होने लगी है और कई खेतों में कपास की फसल में फूलों पर गुलाबी बॉलवर्म का प्रकोप दिखाई देने लगा है। जड़ सड़न के कुछ मामले देखे गए। कपास की पत्ती मोड़ने वाला वायरस रोग केवल कुछ ही खेतों में देखा गया।

सिरसा में, फसल 66 से 91 दिनों की वानस्पतिक और स्क्वेर बनने की अवस्था में होती है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान बादल, बरसात और गर्म आर्द्र मौसम बना रहा। ट्रैक्टर/बैल द्वारा अंतर-कृषि संचालन, हाथ से निराई-गुड़ाई, निराई-गुड़ाई और यूरिया की पहली विभाजित खुराक का प्रयोग किया गया। कुछ स्थानों पर घास-फूस उग आई है। सफ़ेद मक्खी का प्रकोप 10-50/3 पत्तियों के बीच, थ्रिप्स का 23-56/3 पत्तों का और जैसिड का 2-4/3 पत्तों पर ईटीएल से ऊपर पाया गया। ईटीएल के ऊपर गुलाबी बॉलवर्म की व्यापकता रोसेट फूल की क्षति के आधार पर (5-10%) के बीच बताई गई है।

**परामर्श:**

हिसार में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे प्रति एकड़ 1 बैग यूरिया की दूसरी खुराक डालें और सिंचाई या बारिश के बाद हाथ से निराई-गुड़ाई या यांत्रिक निराई करें। कपास की फसल में जहां फूल आना शुरू हो गया है, प्रति एकड़ कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें ताकि गुलाबी बॉलवर्म लार्वा संक्रमण की जांच हो सके। गुलाबी इल्ली की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 2 फेरोमोन ट्रेप/जाल लगाएं। कपास की फसल में शुरुआती मौसम के रोसेट फूलों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें। यदि फूलों में गुलाबी बॉलवॉर्म का संक्रमण 5-10% दिखाई देता है, तो नीम के बीज का अर्क (एनएसकेई) 5% + नीम तेल आधारित फॉर्मूलेशन 5 मिलीलीटर / लीटर (300 या 1500 पीपीएम) + 1.0 ग्राम कपड़े धोने का डिटर्जेंट इमल्शन (प्रारंभिक 1-2 छिड़काव) पानी का छिड़काव करें जिससे थ्रिप्स के प्रारंभिक संक्रमण को भी

नियंत्रित किया जा सकता है। । 60 दिन से अधिक पुरानी फसल के मामले में, प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिलीलीटर/एकड़ की दर से पत्तियों पर छिड़काव करके गुलाबी बॉलवर्म के संक्रमण का प्रबंधन करें, जो थ्रिप्स संक्रमण के खिलाफ भी प्रभावी है। सफेद मक्खी और जैसिड संक्रमण को फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम या एफिडोपाइरोपेन 50 डीसी @ 400 मिली/एकड़ की दर से पत्तियों पर छिड़काव करके प्रबंधित करें। प्रारंभिक रोगसूचक पौधों और आस-पास के स्वस्थ पौधे के लिए प्रभावित पौधों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 2 ग्राम/लीटर पानी से सराबोर कर खेत में जड़ सड़न से प्रभावित भाग का इलाज करें। बाढ़ सिंचाई से पहले जड़ सड़न प्रभावित क्षेत्रों को मेड़ बनाकर सीमित कर दें ताकि इस बीमारी को आगे फैलने से रोका जा सके। शुरुआती मौसम में कपास के लीफ कर्ल वायरस से संक्रमित पौधों को उखाड़कर गाड़ दें। पैराविल्ट के मामले में, प्रभावित पौधों पर लक्षण दिखाई देने के तुरंत बाद, प्रभावित पौधों पर कोबाल्ट क्लोराइड @ 10 मिलीग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करें।

सिरसा में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अंतर-कृषि संचालन कार्य जारी रखें। सिंचाई या बारिश के बाद नाइट्रोजन उर्वरक की पहली विभाजित खुराक डालें। कीट-पतंगों की घटनाओं की नियमित निगरानी करें। बॉलवॉर्म की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रेप/जाल और सफेद मक्खी की निगरानी और प्रबंधन के लिए 40 कम लागत वाले पीले चिपचिपे जाल स्थापित करें। यदि ईटीएल से ऊपर किसी कीट के संक्रमण की सूचना मिलती है, तो एनएसकेई 5% + नीम कीटनाशक 5 मिली/लीटर या नीम आधारित फॉर्मूलेशन 5 मिली/लीटर (300 या 1500 पीपीएम) + 1.0 ग्राम कपड़े धोने का डिटर्जेंट इमल्शन (प्रारंभिक 1-2 स्प्रे) का छिड़काव फसल के 60 दिन पुरानी फसल होने तक कर सकते है। 60 दिन या उससे अधिक की उम्र वाली फसल में सफेद मक्खी के वयस्कों के प्रबंधन के लिए, डायफेंथियूरॉन 50% डब्ल्यूपी @ 240 ग्राम/एकड़ (खेत या तो सिंचित होना चाहिए या वर्षा प्राप्त होनी चाहिए) या एफिडोपाइरोपेन 50 डीसी @ 400 मिलीलीटर/एकड़ या डायनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 60 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें। संक्रमण के प्रारंभिक स्तर पर थ्रिप्स नियंत्रण के लिए एनएसकेई 5% + नीम तेल आधारित फॉर्मूलेशन 5 मिलीलीटर/लीटर (300 या 1500 पीपीएम) + 1.0 ग्राम कपड़े धोने का डिटर्जेंट इमल्शन (प्रारंभिक 1-2 छिड़काव) छिड़काव करें। यदि फसल 60 दिनों से ऊपर है, तो स्पिनेटोरम 11.7 एससी @ 170 मि.ली./एकड़ का छिड़काव करें। 60 दिन या उससे अधिक की उम्र वाली फसल में जैसिड संक्रमण को 150 लीटर पानी में डिनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 60 ग्राम या फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम या टॉल्फ़ेनपाइराड 15 ईसी @ 300 मिलीलीटर या फेनपाइरोक्सिमेट 5% ईसी @ 300 मिलीलीटर प्रति एकड़ का छिड़काव करके प्रबंधित करें। कीट-पतंगों की घटनाओं पर नजर रखें और गुलाबी बॉलवर्म की घटनाओं के लिए नियमित रूप से रोसेट फूल की निगरानी करें। रोसेट फूल को नष्ट करें, और यदि गुलाबी बॉलवर्म घटना फूल के आधार पर ईटीएल को पार कर जाती है यानी प्रति एकड़ देखे गए 100 में से 10 या अधिक फूल, या तो रोसेट आकार में या जीवित लार्वा वाले, लगातार 3 रातों के लिए प्रति रात 5-8 नर ट्रेप पकड़ते हैं, तो प्रोफेनोफॉस 50EC @ 600 मि.ली./एकड़ या इमामेक्टिन बेंजोएट 5SG @ 100 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें।

| राजस्थान | | पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी) | | | | | अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी) | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | जुलाई | | | | | जुलाई | | | | |
| | | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |
| | अजमेर | 0 | 2.6 | 0 | 9 | 0 | 25 | 18 | 27 | 14 | 24 |
| | जोधपुर | 16.3 | 4.4 | 0 | 0 | 0 | 6 | 6 | 8 | 5 | 10 |
| | नागौर | | | | | | 20 | 10 | 18 | 8 | 18 |
| | पाली | 3 | 0 | 0 | 0 | 0 | 12 | 8 | 13 | 13 | 16 |
| | श्रीगंगानगर | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 4 | 8 | 4 | 3 | 10 |
| वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड | | 0.1 से 2.4 मिमी | | 2.5 से 15.5 मिमी | | 15.6 से 64.4 मिमी | | 64.5 से 115.5 मिमी | | 115.6 से 204.4 मिमी | |
| वर्षा श्रेणी | | बहुत हल्की वर्षा | | हल्की वर्षा | | मध्यम वर्षा | | भारी वर्षा | | बहुत भारी वर्षा | |

**फसल की स्थिति:**

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में फसल 14 से 42 दिन में वानस्पतिक अवस्था में होती है। बारिश नहीं होने के कारण खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए अंतर-कृषि संचालन किया गया। खेत खरपतवार से मुक्त हो जाते हैं। जैसिड्स की उपस्थिति देखी गई लेकिन ईटीएल से नीचे। अब तक बीमारियों की कोई घटना सामने नहीं आई है।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, फसल 46 से 81 दिनों की वानस्पतिक, शाखायुक्त, स्क्वेर और फूल लगने की अवस्था में है। पहली/दूसरी/बुवाई के बाद सिंचाई की गई है। हाथ से निराई/गुड़ाई और अंतर-कृषि संचालन कार्य प्रगति पर हैं। खरपतवार अर्थात इटसिट (ट्रायनथेमा प्रजाति), टांडला (डिगेरा अर्वेन्सिस) मोथा (साइपरस रोटंडस), गोखरू (ट्राइबुलस टेरेस्ट्रिस) ने फसल को प्रभावित किया है। जैसिड की आबादी ईटीएल से नीचे देखी गई, सफेद मक्खी की संख्या 8.00 से 25.00/3 पत्तियां और थ्रिप्स की आबादी 6.0 से 13.0/3 पत्तियां दर्ज की गईं। ग्रेड III तक के सीएलसीयूडी के लक्षण कुछ क्षेत्रों में दिखाई देने लगे हैं।

**परामर्श:**

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डुनारपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर आदि) में किसानों को समय पर खेतों से अतिरिक्त वर्षा जल निकालने की सलाह दी जाती है। पहले बोई गई कपास में रस चूसने वाले कीटों के संक्रमण पर नजर रखें। यदि ईटीएल के पास किसी भी चूसने वाले कीट के संक्रमण की सूचना मिलती है, तो नीम के बीज का अर्क (एनएसकेई) 5% + नीम का तेल 5 मिलीलीटर / लीटर या नीम तेल आधारित फॉर्मूलेशन 5 मिलीलीटर / लीटर (300 या 1500 पीपीएम) + 1.0 ग्राम कपड़े धोने का डिटर्जेंट इमल्शन छिड़काव करें। सफेद मक्खी और जैसिड की घटनाओं पर नजर रखने के लिए प्रति एकड़ 8-10 पीले चिपचिपे ट्रैप लगाएं। नम मिट्टी की स्थिति में जहां हाथ से निराई करना संभव नहीं है, यदि खेत घास वाले खरपतवारों से संक्रमित है तो क्विज़ालोफॉप इथाइल 5% ईसी @ 2 मिली/लीटर पानी, यदि चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार से संक्रमित है तो पाइरिथियोबैक सोडियम 10% ईसी @ 1.25 मिली/लीटर पानी यदि घास और चौड़ी पत्ती वाले दोनों खरपतवार से संक्रमित है तो पाइरिथियोबैक सोडियम 6% ईसी + क्विज़ालोफॉप एथिल 4% ईसी @ 2-2.5 मिली/लीटर पानी जैसे शाकनाशी का प्रयोग करें।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, किसानों को अधिकतम उर्वरक उपयोग दक्षता के लिए पहली और दूसरी सिंचाई के बाद नाइट्रोजन उर्वरकों की अनुशंसित खुराक लगाने की सलाह दी जाती है। मिट्टी के प्रकार और नमी की स्थिति के आधार पर कुल 27.5 किलोग्राम यूरिया तीन भागों में दें, पहला बेसल पर, दूसरा पहली सिंचाई पर और तीसरा स्क्वेर गठन के दौरान/दूसरी सिंचाई के दौरान। जहां भी फसल 65 दिन से अधिक अवधि की हो, वहां KNO3 @ 2% का पत्ते पर प्रयोग करें। कपास के खेतों के आसपास और आसपास खरपतवार हटा दें। कीटों और बीमारियों के लिए फसल की नियमित निगरानी करें। यदि ईटीएल पार हो जाए तो जैसिड और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए फ्लोनिकैमिड 50% डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम/एकड़ या डिनोटफ्यूरान 20%एसजी @ 60 ग्राम/एकड़ या एफिडोपाइरोपेन 50 डीसी @ 1.50 मिली/लीटर (400 मिली/एकड़) पानी का छिड़काव करें। जब भी गुलाबी बॉलवर्म की आबादी ईटीएल को पार कर जाए, तो रासायनिक कीटनाशकों जैसे इमामेक्टिन बेंजोएट 5% एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या प्रोफेनोफोस 50% ईसी @ 600 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करें। पिछले वर्ष गुलाबी बॉलवर्म से प्रभावित पाए गए स्थानों की बारीकी से निगरानी करें। गुलाबी बॉलवॉर्म गतिविधि की निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन ट्रैप स्थापित करें। प्रारंभिक स्तर पर चूसने वाले कीटों और गुलाबी बॉलवॉर्म की घटनाओं को नियंत्रित करने के लिए नीम के बीज का अर्क (एनएसकेई) 5% + नीम फॉर्मूलेशन 5 मिलीलीटर/लीटर या नीम तेल आधारित फॉर्मूलेशन 5 मिलीलीटर/लीटर (300 या 1500 पीपीएम) + 1.0 ग्राम कपड़े धोने का डिटर्जेंट इमल्शन पानी का छिड़काव करें।

| मध्य प्रदेश | | पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी) | | | | | अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी) | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | जुलाई | | | | | जुलाई | | | | |
| | | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |
| | खरगाँव | | | | | | | | | | |
| | धार | 0 | 0 | 0 | 2.7 | 0 | 22 | 60 | 19 | 17 | 18 |
| | खांडवा | | | | | | | | | | |

| वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड | 0.1 से 2.4 मिमी | 2.5 से 15.5 मिमी | 15.6 से 64.4 मिमी | 64.5 से 115.5 मिमी | 115.6 से 204.4 मिमी |
|---|---|---|---|---|---|
| वर्षा श्रेणी | बहुत हल्की वर्षा | हल्की वर्षा | मध्यम वर्षा | भारी वर्षा | बहुत भारी वर्षा |

**फसल की स्थिति:**

खंडवा में लगभग पूरे क्षेत्र में कपास की फसल बोई जा चुकी है। बोई गई फसल अंकुरण और प्रारंभिक वानस्पतिक या वानस्पतिक/ स्क्वेर और फूल बनने की अवस्था में 21 से 70 दिन पुरानी है। अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्र में मानसून सक्रिय है। खेत की स्थितियों के आधार पर स्पॉट निराई, गैप फिलिंग और थिनिंग/ विरलन, फर्टिगेशन का काम चल रहा है। सायनोडोन डैक्टिलॉन, साइपरस रोटंडस, कैमेलिना सेसिलिस, कैमेलिना बेंगालान्सिस, डिगेरिया अर्वेन्सिस, यूफोरबिया हिरटा, यूफोरबिया जेनिकुलैट और फिलैन्थस निरूरी जैसे खरपतवार खेतों पर हावी हो गए हैं। कुछ खेतों में जैसिड और सफेद मक्खी की घटनाएं देखी गई हैं। खेतों में बीमारियों और शारीरिक विकार का कोई प्रकोप नहीं।

**परामर्श:**

खंडवा में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे रासायनिक उर्वरक की दूसरी और तीसरी खुराक क्रमशः 150:75:40 किलोग्राम एनपीके प्रति हेक्टेयर की दर से दें, साथ ही नाइट्रोजन की विभाजित खुराक 25% 30 दिनों पर और नाइट्रोजन 25%, फॉस्फोरस और पोटाश @ 50% की दर से 10 से 15 सेमी की गहराई पर स्तम्भ विधि द्वारा 60 दिन में दें। जिस क्षेत्र में फसल 35 दिन से अधिक पुरानी हो गई हो , उस क्षेत्र में बैलचालित कोलपा से निराई-गुड़ाई शुरू करें। गुलाबी बॉलवॉर्म की निगरानी के लिए प्रति एकड़ दो फेरोमोन ट्रैप लगाएं और सफेद मक्खी की निगरानी के लिए 8 प्रति एकड़ की दर से पीले चिपचिपे ट्रैप लगाएं। ईटीएल को पार करने पर रस चूसने वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए फ्लोनिकैमिड 50% डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम/एकड़ या डिनोटफ्यूरान 20% एसजी @ 60 ग्राम/एकड़ या एफिडोपाइरोपेन 50 डीसी @ 400 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करें।

**बुआई से पहले की प्रथाओं का विवरण/ पैकेज**

1. पिछले फसल मौसम के बचे हुए डंठलों और आंशिक रूप से खुले हुए बीजकोषों को खेतों से साफ करें। उखाड़े गए कपास के डंठलों को खेत की मेड़ों पर न रखें। फसल के मौसम के अंत में, पिछली पीढ़ी के गुलाबी बॉलवॉर्म लार्वा फसल के अवशेषों जैसे कि संक्रमित बॉल्स, डंठल या मिट्टी में सुसुप्तअवस्था/हाइबरनेशन में प्रवेश करते हैं। इसलिए, गुलाबी बॉलवर्म के जीवन चक्र को तोड़ने के लिए ऐसे संक्रमित अवशेषों को तुरंत नष्ट कर देना चाहिए। अवशेषों के नष्ट होने से जीवाणु पत्ती झुलसा, जड़ सड़न और फंगल पत्ती धब्बे जैसी बीमारियों से नए कपास की फसल के इनोकुलम और संक्रमण को कम करने में भी मदद मिलेगी।
2. फसलकाल के बाद कीट या आत्मघाती पतंगे, यदि कोई हों, को फंसाने के लिए मार्केट यार्ड और जिनिंग मिलों के परिसर में 20 मीटर की दूरी पर कम से कम 10 फेरोमोन ट्रेप/जाल स्थापित करें।. फेरोमोन जाल में लूर समय पर बदलें। क्षतिग्रस्त बीजों से निकलने वाले लार्वा को भी मार दें। इससे जिनिंग या मार्केट यार्ड परिसर से आस-पास के खेतों तक गुलाबी बॉलवर्म के संक्रमण को फैलने से रोकने में मदद मिलेगी।
3. कपास की फसल की मानसून पूर्व बुआई से बचें। जल्दी बोई गई फसल में स्क्वेरऔर फूल जैसी प्रजनन संरचनाएं जल्दी आ जाती हैं। पिछले सीज़न की सुसुप्तअवस्था से निकलने वाले गुलाबी बॉलवॉर्म इन स्क्वेर और फूलों पर अंडे देते हैं, इस प्रकार जल्दी बोई गई फसल नए सीज़न में गुलाबी बॉलवॉर्म की पहली पीढ़ी को पूरा करने में मदद करती है। यदि समय पर नियंत्रित

नहीं किया गया, तो इस आबादी की अगली पीढ़ियां समय पर बोई गई कपास की फसल के स्क्वेर, फूल और बीजकोषों की लगने  के साथ फैलती हैं।

4. गर्मियों में गहरी जुताई करने से अप्रैल-मई में सूरज की चिलचिलाती गर्मी के कारण मिट्टी में छिपे सुप्त लार्वा और प्यूपा को बाहर निकालने और मारने में मदद मिलती है। इसके अलावा, जुते हुए खेतों का अनुसरण करने वाले पक्षी, कीड़ों के इन जीवन चरणों का शिकार करते हैं। इससे आने वाले मौसम की कपास की फसल पर गुलाबी बॉलवॉर्म, पत्ती खाने वाले कैटरपिलर जैसे कीटों और विल्ट, जड़ सड़न और नेमाटोड जैसी मिट्टी जनित बीमारियों को कम करने में मदद मिलती है।
5. गुलाबी बॉलवर्म के जीवन चक्र को तोड़ने के लिए पिछले सीज़न के दौरान जिन खेतों में गुलाबी बॉलवर्म का अत्यधिक प्रकोप था, वहां फसल चक्र अपनाना चाहिए।  कपास गुलाबी बॉलवर्म का एकमात्र भोजन  स्त्रोत है, इसलिए फसल चक्र इस कीट के जीवन चक्र को तोड़ने में मदद करता है।  रोगग्रस्त खेतों में मृदा जनित रोगों और सूत्रकृमि के संक्रमण को रोकने में फसल चक्र बहुत प्रभावी है।
6. कपास की रस चूसने वाली कीट और रोग प्रतिरोधी, कम अवधि वाली और जल्दी पकने वाली किस्में/संकर/किस्में उगाएं। इससे फसल के शुरुआती विकास चरण के दौरान रस चूसने वाले कीटों और बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए कीटनाशकों के अवांछित छिड़काव से बचने में मदद मिलती है। गुलाबी बॉलवर्म का संक्रमण मध्य सीज़न से शुरू होता है और सीज़न के अंत तक लगातार बढ़ता है। इसलिए, कम अवधि और जल्दी पकने वाली किस्में देर के मौसम में गुलाबी बॉलवर्म के संक्रमण से बचने में मदद करती हैं।
7. कपास की फसल की बुआई जून माह में 80-100 मिमी मानसूनी वर्षा होने पर ही करनी चाहिए। उचित अंकुरण और फसल की उचित  संख्या सुनिश्चित करने के लिए, प्रारंभिक अंकुर चरण के दौरान लंबे समय तक शुष्क अवधि का सामना करने के लिए, मिट्टी में इष्टतम नमी होनी चाहिए। इससे वर्षा के लंबे समय तक शुष्क रहने के कारण दोबारा बुआई से बचने में भी मदद मिलती है। जून में समय पर बुआई करने से गुलाबी सुंडी के शुरुआती संक्रमण से बचने में मदद मिलती है।
8. गुलाबी बॉलवॉर्म के प्रबंधन के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) रणनीति के कार्यान्वयन के संबंध में कपास किसानों के बीच जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए। दुकानदारों को यह भी सलाह दी जा सकती है कि वे किसानों को प्री-मानसून बुआई न करने के लिए सूचित करें। इससे किसानों तक सही संदेश अधिक प्रभावी ढंग से पहुंचाने में मदद मिलेगी।